

## पूरवी अफ्रीका में उष्णकटबिंधीय ग्लेशियरों में कमी

**स्रोत: डाउन टू अर्थ**

वर्ष 2021-2022 के लिये उच्च-रिज़ॉल्यूशन उपग्रह छवियों के हालिया विश्लेषण से अफ्रीका में विशेष रूप से पूरवी अफ्रीका के उष्णकटबिंधीय **ग्लेशियरों** में बर्फ के कम होने की चिंताजनक प्रवृत्तिका पता चला है।

- पूरवी अफ्रीका में उष्णकटबिंधीय ग्लेशियर, जिनमें **रुवेंज़ोरी पर्वत (युगांडा/कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य)**, **माउंट केन्या (केन्या)** और **कलिमिंजारो (तंजानिया)** शामिल हैं, जो **भूमध्य रेखा के 3° अक्षांश के बीच हैं**, उनका आकार काफी कम हो गया है।
- वर्ष 1900 के बाद से कलिमिंजारो ने अपने ग्लेशियर क्षेत्र का केवल 8.6%, माउंट केन्या ने 4.2% और रुवेंज़ोरी रेंज ने 5.8% बरकरार रखा है।
  - इन अध्ययनों से प्राप्त होता है कि पूरवी अफ्रीका में आधुनिक ग्लेशियर का 90% से अधिक वस्तुतः वर्ष 2020 की शुरुआत तक कम हो गया है।
  - **माउंट कलिमिंजारो** अफ्रीकी महाद्वीप का सबसे ऊँचा पर्वत और **वर्ष का सबसे ऊँचा खड़ा पर्वत (समुद्र तल से 5,895 मीटर)** है।
- यह अध्ययन **जलवायु परिवर्तनशीलता और जलवायु परिवर्तन के संकेतक के रूप में उष्णकटबिंधीय ग्लेशियरों** के महत्त्वपूर्ण महत्त्व को रेखांकित करता है, इस पर्यावरणीय चुनौती के सामने आगे के शोध तथा संरक्षण प्रयासों की तत्काल आवश्यकता पर बल देता है।
- उष्णकटबिंधीय ग्लेशियर आमतौर पर **भूमध्य रेखा के पास और इंटरट्रोपिकल कन्वर्जेंस ज़ोन (ITCZ) के अंदर स्थिति होते हैं**, जो उन्हें जलवायु विविधताओं के प्रतीक संवेदनशील बनाते हैं।
  - ITCZ वह स्थान है जहाँ उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध की व्यापारिक पवनें भूमध्य रेखा के पास मिलती हैं।

**और पढ़ें: [लुप्त हो रहे अफ्रीकी दुर्लभ ग्लेशियर, 21वीं सदी में वैश्विक ग्लेशियर परिवर्तन](#)**